॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमादितव्यम्॥

(तैत्तिरीयोपनिषद् 1/11)

स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद न करें।

वर्ष ३२, अंक १८ **एक प्रति : ३ रुपये**

सोमवार १३ अप्रैल, २००९ से १९ अप्रैल, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

जम्मू चलो! जम्मू चलो!! जम्मू चलो!!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में
आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के तत्त्वावधान में

विश्वशान्ति महायज्ञ एवं

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24 अप्रैल से 26 अप्रैल, 2009   स्थान: महाजन हॉल, शालामार, जम्मू (ज० क०)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें। पधारने वाले समस्त आर्यजनों के भोजन व आवास की व्यवस्था सभा की ओर से की जाएगी। सम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजन *तुरन्त अपना रेलवे आरक्षण जम्मू जाने वाली किसी भी रेलगाड़ी से करा लेवें तथा अपने पहुंचने की सूचना निम्न अधिकारियों को फोन तथा पत्र द्वारा दे देवें जिससे कि समुचित व्यवस्था की जा सके। श्रीनगर-जम्मू भ्रमण की व्यवस्था जम्मू पहुंचने पर ही की जा सकेगी। साधारण आवास एवं भोजन की व्यवस्था जम्मू-कश्मीर सभा की ओर से की जाएगी।*

–: निवेदक :–

भारतभूषण गुप्ता (प्रधान) 09419133884   डॉ. रविकान्त गुप्ता (मन्त्री) 09419833630   सत्यवीर गुप्ता (कोषाध्यक्ष) 0191-2583517

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर, आर्यसमाज बख्शी नगर, जम्मू – 180001 (जम्मू-कश्मीर)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के तत्वावधान में

आर्यसमाज मोहन गार्डन के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन

आर्यसमाज के माध्यम से सेवा कार्य को बढ़ावा दें – महाशय धर्मपाल

पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा आयोजित नवनिर्मित आर्यसमाज मोहन गार्डन का उद्घाटन समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री तेजभान आर्य, श्री रामजीलाल आर्य एवं श्री रामेश्वर दयाल जी के प्रयास एवं श्री देवकीनन्दन आर्य जी के पुरुषार्थ से आर्यसमाज मोहन गार्डन के सुन्दर भवन का निर्माण हुआ।

नव निर्मित भवन का उद्घाटन महाशय धर्मपाल जी तथा अन्य गणमान्य महानुभावों ने नारियल फोड़कर किया।

दिनांक 3, 4, 5 अप्रैल के तीन दिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत यज्ञ एवं प्रवचनों के माध्यम से आर्यसमाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के विषय में स्थानीय लोगों को अवगत कराया गया। रविवार 5 अप्रैल के मुख्य कार्यक्रम में पश्चिमी दिल्ली की अनेकों आर्यसमाजों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एम.डी. एच.) की अध्यक्षता में कार्यक्रम का संचालन श्री विनय आर्य (महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) एवं श्री वीरेन्द्र सरदाना (महामन्त्री प. दि.वेद प्रचार मण्डल) ने किया। तीन दिवसीय यज्ञ के ब्रह्मा एवं विशेष वक्ता के रूप में आचार्य इन्द्रदेव जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री रजनीश वर्मा (कोषाध्यक्ष दिल्ली वेद प्रचार मण्डल) को विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में स्वामी श्रेयोनन्द विदेहयति एवं श्री राजकुमार जी के प्रवचन हुए। श्री धर्मवीर आर्य एवं महिला आर्यसमाज कीर्तिनगर द्वारा किए गए भजनों का सबने आनन्द उठाया। कार्यक्रम में श्री यशपाल आर्य, श्री सुभाष त्यागी एवं अनेकों स्थानीय उद्योगपति उपस्थित थे। बहुत समय पश्चात हुए नवीन आर्यसमाज के उद्घाटन के प्रयास की सबने सराहना की। विशेष दानदाताओं के सम्मान के पश्चात श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा (प्रधान, वेद प्रचार म.प. दिल्ली) ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सबका धन्यवाद किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री जगदीश लाल का निधन

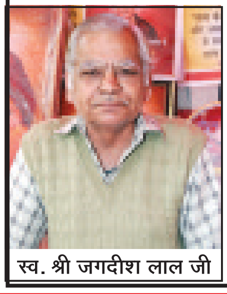

स्व. श्री जगदीश लाल जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्थापना काल से सभा कार्यालय में अपनी अप्रतिम सेवाएं प्रदान कर रहे श्री जगदीशलाल जी का शनिवार 11 अप्रैल, 2009 को कुछ दिनों की बीमारी के बाद लगभग 55 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे आर्यसमाज को अपनी माता मानकर कार्य करते थे। मृत्युपर्यन्त समर्पित भाव से कार्यालय अध्यक्ष के पद पर आसीन श्री जगदीशलाल जी अत्यन्त ही निष्ठावान, कर्मठ व परिश्रमी थे।

– विस्तृत सूचना पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज मंगोलपुरी, दिल्ली के नव निर्मित भवन का

उद्घाटन समारोह

रविवार 3 मई, 2009 प्रात: 11 बजे

स्थान : आर्यसमाज – ओ. 253, मंगोलपुरी, नई दिल्ली

उद्घाटन : पूज्य आचार्य बलदेव जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा)

भजन : पं. राजवीर शास्त्री

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

–: निवेदक :–

ब्र. राजसिंह आर्य (प्रधान)   विनय आर्य (महामन्त्री)   अनिल तनेजा (कोषाध्यक्ष)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

भजनप्रकाश आर्य (प्रधान)   दुर्गाप्रसाद कालरा (मन्त्री)

वेद प्रचार मंडल उ. पश्चिमी दिल्ली

राममेहर आर्य (प्रधान)   हरिओम आर्य (मन्त्री)   वेदपाल आर्य (कोषाध्यक्ष)

आर्यसमाज मंगोल पुरी, दिल्ली

दर्शन व्याख्या - 6

नास्तिक दर्शन : बौद्ध दर्शन

गतांक से आगे :–

गौतम बुद्ध के समय से लेकर 350 ईस्वी तक पाली–साहित्य में 'हीनयान' शब्द का व्यवहार बौद्धधर्म (दर्शन) की एक शाखा के रूप में होता रहा। 'हीन' का अर्थ है नीच और 'यान' का अर्थ है मार्ग। दार्शनिक दृष्टिकोण से 'हीनयान' शब्द से उस निम्न (नीच) साधना–पद्धति का बोध होता है जिसका अवलम्बन बौद्ध–भिक्षु निर्वाण के लिए किया करते थे। 'महायान' शब्द के दो खण्ड हैं – महा+यान। 'महा' का अर्थ है महान्, प्रशस्त, श्रेष्ठ या बड़ा और 'यान' का अर्थ है मार्ग। महायान का आदर्श ऊंचा था और हीनयान से बढ़कर था, अतः अधिक लोकप्रिय था। यों, इसके प्रारम्भ की सुनिश्चित तिथि देना कठिन है। महायान का प्रमुख दार्शनिक ग्रन्थ 'प्रज्ञापारमिता' है। इस ग्रन्थ की रचना सुनिश्चित रूप से महायान के प्रचार–प्रसार के उपरान्त ही हुई होगी और इस आधार पर अनुमानतः यह कहा जा सकता है कि महायान का प्रचार–प्रसार ईस्वी सन् की पहली शताब्दी में हो गया होगा।

महायान के प्रमुख सिद्धान्त हैं बोधिसत्त्व की भावना, त्रिकाम (धर्मकाम, सम्भोगकाम, निर्वाणकाम) की कल्पना, दशभूमि की कल्पना, निर्वाण की आनन्द–रूप में कल्पना आदि।

हीनयान का सम्बन्ध 'थेरवाद' से भी जोड़ा जाता है। 'हीनयान' से सम्बद्ध प्रमुख कृतियां हैं 'अट्टकथा', 'कथावस्तु', 'ललितविस्तर', 'दिव्यावदान', 'त्रिपिटक ग्रन्थ, थेर गाथाएं आदि। महायान से सम्बद्ध प्रमुख ग्रन्थ हैं – 'प्रज्ञापारमिता', 'सूत्रालंकार', 'बुद्धचरित', 'महायान सूत्र' (सद्धर्म पुण्डरीक), 'लंकावतार सूत्र' आदि। बौद्ध धर्म के कुछ अन्य उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं – 'माध्यमिक कारिका', 'प्रज्ञापारमिता शास्त्र', 'दशभूमि विभाषा शास्त्र', 'प्रमाण समुच्चय', 'प्रमाण वार्तिक' आदि। बौद्ध दार्शनिकों में अश्वघोष, नागार्जुन, असंग, वसुबंधु, संघभद्र, धर्मत्रात वसुमित्र, यशोमित्र, दिङ्नाथ, धर्मकीर्ति आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

निष्कर्षतः आस्तिक और नास्तिक दर्शनों में प्रमुख भेदक तत्त्व वेद के प्रामाण्या प्रामाण्य का है। आस्तिक षड्दर्शन हैं न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त (उत्तर मीमांसा), और मीमांसा (पूर्व मीमांसा)। नास्तिक दर्शनों में चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शनों एवं इनके भेदोपभेदों को परिगणित किया जाता है।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया,
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली

क्रमशः

Question & Answer

Om & Gyatri Mantra

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. **- Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q.: Is this possible even after doing lot of sins and Bad karmas, to live life normally in every birth, if we have guilt of what we did and if we want to improve after doing innumerous bad karmas. Can we nullify the bad effects of our bad karmas completely by doing some good karmas. what is the ratio?**Monika**

Ans.: Not possible please to live life normally. The soul will have to take birth in the bodies of birds, animals etc., to face sorrows, etc. According to Atharvaveda mantra 9/10/16 also. Yes please it is possible to kill the bad karmas by listening/studying Vedas, performing Yajyen with Ved mantras, practising ashtang yoga philosophy, jaap of holy name of God, attending satsang/preachings of learned acharyas who know Vedas, etc. Time limit is based on devotion of time and tapsya for the same.

Q.: Is this possible to achieve 'Moksha'? **Monika**

Ans.: Moksh can be achieved by adopting the above path.

Q.: "OM" is also written as "AUM" we also utter the divine word according to the spelling i.e it starts with a open mouth "a" then a circled lip "u" then finally closed mouth tongue tounching the tip of buccal cavity "M". I have had heard somewhere that "OM" can also be uttered as "ong" because of the (bindi or .). What is the real correct pronunciation? Please help me know it. **Monika**

Ans.: You have correctly said but never pronounce as ong. However this pious name and gayatri mantra must be listened from the mouth of an acharya with its meaning.

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

वैदिकवाङ्मये विज्ञानतत्त्वानि

गत अंकेन क्रमेशु :–

तद्यद उपस्पृश्यत्य मेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति तेन पूतिरन्तरतो मेध्या वा आपो मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानीति पवित्रं वाऽआपः पवित्रपूतो व्रतमुपायानीति तस्माद्वाऽअपऽउपास्पृशति। (श0 ब्रा0 1/1/1/1/1) आचमनं, प्रक्षालनं वैज्ञानिकं सत्यम् एवमेव इदं वैज्ञानिक – तत्त्वानि वैदिकवाङ्मये परिलक्ष्यते।

आधुनिक विज्ञाने चिकित्साविज्ञाने सजीवः गर्भस्तु जलान्तर्गते मातृकुक्षौ प्रत्यक्षमेव दृश्यते (Ultra sound) इति यन्त्रेण ज्ञायते यत् गर्भस्य का स्थितिः? अस्माकं वैदिकवाङ्मये पुरुषसूक्ते उत्तरनारायणे शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनसंहितायाम् अस्य चिन्तनं विद्यते –

प्रजापतिश्चरति गर्भे उन्तरा जायमानो बहुधा वि जायते।
तस्य योनिं परिपश्यन्ती धीरास्तस्मिन् तस्थुर्भुवनानि विश्वा।।

(शु. य.मा.वा. सं. उत्तरनारायणम् अध्याय 31कण्डिका 19)

वैदिकवाङ्मये मनोविज्ञानस्यापि चिन्तनं विद्यते। मनसा एव विज्ञानस्य कल्पना चेतना प्रसूता। मनसा कल्पते यथैव कल्पते तथैव क्रियते यथैव क्रियते तथैव परिणामोऽपि भुङ्क्ते इति एतस्मादेव मनसा स्वरूपचिन्तनमेव कर्त्तव्यं छान्दोग्योपनिषद् उक्तम् 'आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः।'

ईशावास्योपनिषदि अपि उक्तम् –

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।। (ई. वा. उ. 1)

मनसा त्यागेन भोक्तव्यं। लोकोक्तिरियं यत् स्वस्थे शरीरे स्वस्थः मस्तिष्कः निवसति। अतो हि आरोग्यप्राप्त्यर्थं मनस्तु स्वस्थं भवितव्यम्। यतो हि स्वस्थमनसा चिन्तनम्। तत एव वैज्ञानिकचिन्तनम्। एतस्मादेव मनस्तु शिवसंकल्पयुक्तोऽस्तु इति प्रार्थना कृता। शिवसंकल्पसूक्ते शुक्लयजुर्वेदे माध्यन्दिवाजसनेयिसंहितायाम्–

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। (शु.य.मा.सं. 34/1)

– डॉ० हरीश्वर दीक्षित, अध्यक्ष संस्कृत विभाग
राजा हरपालसिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ.प्र.)

क्रमशः

एक प्रेरक जीवन

श्रद्धेय श्री लालमन जी आर्य

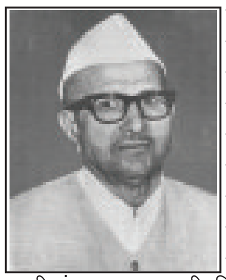

श्री लालमन आर्य का जन्म राजस्थान के शेरड़ा गांव, जिला श्रीगंगानगर में चैत्र शुक्ल द्वितीया सं. 1968 को हुआ। कालान्तर में अपना निवास हिसार (हरियाणा) को बनाया। बाल्यकाल गांव के गरीब किसानों में बीता। जीवन के साधना क्षेत्र बने उत्तरी बंगाल तथा कलकत्ता जैसे नगर। व्यापार के लिए बंगाल के चाय बगानों में अपना व्यापार प्रारम्भ किया। कुछ वर्ष के पश्चात् सन् 1944 में अपना कार्यक्षेत्र कलकत्ता बनाया, सुत्तापट्टी में भारत टेक्सटाइल्स के नाम से कपड़े का व्यवसाय किया। सन् 1972 में वानप्रस्थ जीवन की दीक्षा लेने के पहले पारिवारिक जनों के साथ परिवहन व्यवसाय 'इकोनोमिक ट्रांस्पोर्ट आर्गनाजेशन' सन् 1962 में स्थापना कर सारे भारत में शाखाएं खोली।

ऋषि दयानन्द एवं महात्मा गांधी उनके आदर्श महापुरुष थे। यतिवर दयानन्द के उपदेशों से प्रेरणा ग्रहण कर आडम्बर, पाखण्ड, अंधविश्वास व सामाजिक कुरीतियों का प्रबल विरोध किया। कलकत्ता में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक सुधार के कार्यों को विस्तार मिला। विधवा विवाह का समर्थन, बाल विवाह का विरोध, दहेज, लेनदेन, आडम्बर दिखावा का विरोध और विवाहों में सुधार लाने पर विशेष प्रयास किया। साथ ही साथ स्त्री शिक्षा का प्रचार व गांवों में प्रचलित पर्दा प्रथा, छूआछूत, मृतक भोज आदि कुप्रथाओं को हटाने का प्रयास। महात्मा गांधी के कारण स्वदेशी आन्दोलन के प्रति आकृष्ट हुए। गोरक्षा के कार्य में सक्रिय रहे।

सामाजिक सेवाओं में अग्रणी रहे। पूर्वी पाकिस्तान से निकाले गए हिन्दू पश्चिम बंगाल में कई वर्षों तक कैम्पों में रहे। उन शरणार्थियों के लिए खाने, कपड़ों की व्यवस्था की। सन् 1952 में हिसार जिला क्षेत्र में भयंकर दुर्भिक्ष के कारण बहुत बड़ा हिस्सा भुखमरी का शिकार बन गया। कलकत्ता से मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी की ओर से श्री रामेश्वर टोटिया के नेतृत्व में श्री लालमन जी व उनके दल ने कई दिनों तक रहकर सेवा कार्य किया जिसमें उनके सहयोगी रहे –

– शेष पृष्ठ 6 पर

मित्रता मधुर और पवित्र बन्धन है

मित्रता और दोस्ती शब्द दोनों ही परस्पर पर्यायवाची और समानार्थक हैं। दोस्ती शब्द व्याकरण में भाववाचक संज्ञा है। ऐसे ही दोस्त शब्द है तो संज्ञा परन्तु यह जातिवाचक संज्ञा है। यदि इस शब्द का संधिछेद कर देवें तो शब्द यूं हो जाएगा = दो+सत् यानि दो सत्य अर्थात दो सच्चाईयां। भाव है कि दो सच्चे व्यक्तियों का मधुर मिलन अर्थात् पवित्र बन्धन।

"सर्वा आशा मम मित्रम भवन्तु" – इस वैदिक मन्त्र के अर्थ के अनुसार सब दिशाएं मेरी मित्र हो जाएं। सब मित्र हो जाने पर व्यक्ति अजातशत्रु हो जाता है अर्थात् व्यक्ति का कोई शत्रु नहीं होता। निःसन्देह आज के पदार्थवादी युग में उपरोक्त बात शत् प्रतिशत गले से नहीं उतरती क्योंकि ऐसा व्यक्ति कोई लाखों में एक होगा जिसका कोई शत्रु न हो। फिर भी दोस्ती दोस्ती ही होती है। जो समान धाराओं के मिलन से पनपती है। दो व्यक्तियों के आचार–विचार, गुण, कर्म, स्वभाव के पवित्र बन्धन का नाम है दोस्ती। अर्थात् दो सच्चे व्यक्तियों का परस्पर स्नेह। जहां विचारों में चिकनापन और व्यवहार में लिपलिपापन होगा वहां दोस्ती मजबूत होगी। दोस्ती में स्नेह भाव दोनों तरफ ही होना चाहिए।

शत्रु दूर से नहीं आता, अपने ही आस–पास अपनों में से ही पैदा होता है। तब यह पैदा होता है जब स्वार्थ अर्थात् देने के बजाय लेने की ललक मन में समाई रहे। दोस्ती कोई सौदा या व्यापार नहीं अपितु यह निश्छल, निरपराध, निष्कलंक व निरभिलाष होती है। कायर, कृतघ्न, दुष्चरित्र व्यक्ति कभी भी किसी का दोस्त नहीं हो सकता। वह सबका शत्रु बन जाता है। शत्रु को संस्कृत में अराति कहते हैं। अराति व्यक्ति वह होता है जो हमेशा लेता ही लेता है देता कभी कुछ नहीं। वह दूसरों के साथ हमेशा अपनी स्वार्थ सिद्धि करता है। धीर, गम्भीर, वीर पुरुष ही अपनी जान की बाजी लगाकर दोस्ती को निभाते हैं।

कई लोग व्यर्थ में ही किसीको अपना शत्रु मानकर कुढ़ते व खीजते हैं। शत्रुता का कोई विशेष कारण नहीं होता, बल्कि उनका अपना अशान्त मन और अनन्त स्वार्थ ही कारण होता है। वह मित्र नहीं जो समय आने पर सहायता न करे। मित्र वही है जो सुख और दुःख में समान रूप से साथ देवे और जो साथ ही तरे और साथ ही डूबे। दो व्यक्तियों में से एक व्यक्ति यदि दूसरे से चालाकी करे और कहे कि आप हमारे घर आएंगे तो लाएंगे क्या? तथा हम आपके घर आएंगे तो खिलाएंगे क्या? यह दोस्ती कदापि नहीं अपितु ठगी है, धोखा है, स्वार्थ सिद्धि है।

नीतिकारों ने दोस्ती दो प्रकार की मानी है। प्रातः और सायंकाल की छाया के समान दुष्ट व सज्जनों की दोस्ती भिन्न –भिन्न प्रकार की होती है। प्रातः काल की छाया पहले बड़ी और सायंकाल में वही छाया घट जाती है। अर्थात् छोटी हो जाती है। ऐसे ही दुष्टों की दोस्ती आरम्भ में बड़ी होती है और बाद में निरन्तर छोटी होती जाती है और अन्ततः समाप्त हो जाती है। सायंकाल के समय की छाया पहले छोटी परन्तु बाद में बढ़ती रहती है, ऐसे ही सज्जनों की मित्रता शुरु में धीरे–धीरे उत्पन्न होती है और बाद में निरन्तर बढ़ती जाती है।

जिस व्यक्ति का हृदय हमेशा प्रेम, स्नेह व दोस्ती के रंग में रंगा रहता है, उसे कोई शत्रु दिखाई नहीं देता। स्वार्थी आदमी को सावन के अन्धे की तरह सब शत्रु नजर आते हैं। दोस्ती और शत्रुता मानव के सहज स्वभाव हैं, परन्तु ज्ञानी और विवेकी पुरुष वह होता है जो सब को समान मानें। अपने और पराए का भेद भुला देवे। नीतिकारों के अनुसार मित्र वह जो मित्र को पाप से हटाए, मित्र के भेद को सुरक्षा प्रदान करे, उसके गुणों का सम्मान करे औरउसे हितकर कार्यों में व्यस्त रहने का परामर्श देवे। सच्चा मित्र विपत्ति में मित्र को छोड़ता नहीं तथा जरुरत होने पर उसे धन आदि सब कुछ देने को तत्पर रहे। कृष्ण और सुदामा की दोस्ती इस मापदण्ड का खरा उदाहरण है। दोस्ती किसी जाति, बिरादरी, ऊंच–नीच, गरीब–अमीर, मजहब या सुन्दर–असुन्दर की मोहताज नहीं होती। दोस्ती वह जो आशा और निराशा के ग्रहण से बची रहे। दोस्ती वह जो विश्वास की पटड़ी पर टिकी रहे। यदि दोस्ती का उपरोक्त मापदण्ड सुदृढ़ है तो दोस्ती की लता फलने–फूलने लगेगी। हां, एक बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि दोस्ती रूपी लता को बचाए रखने के लिए क्रोध की तलवार को हमेशा के लिए विवेक और शान्त स्वभाव की म्यान में बन्द रखना पड़ेगा, क्योंकि दोस्ती परीक्षा लेती है, जोकि एक महान् त्याग का विषय है।

– सतीशचन्द्र आर्य
बी–777, आर्यनगर, फाजिल्का (पंजाब)

बोध कथा

कल्पवृक्ष

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

नारद जी एक बार नगर में आए। एक पुराना मित्र उन्हें मिला, संसार की विपत्तियों में फंसा हुआ। नारद जी ने कहा – 'यहां संकट में पड़े हो। आओ, तुम्हें स्वर्ग ले चलूं।'

उसने कहा – 'और क्या चाहिए!'

दोनों पहुंच गए स्वर्ग में। वहां सुन्दर पत्तों वाला, सुन्दर छाया वाला कल्पवृक्ष खड़ा था। नारद जी ने कहा – 'तुम इस वृक्ष के नीचे बैठो। मैं अभी अन्दर से मिलकर आता हूं।'

नारद जी चले गए तो उस आदमी ने इधर–उधर देखा। सुन्दर वृक्ष, सुन्दर छाया, धीमी–धीमी शीतल वायु। उसने सोचा कितना उत्तम स्थान है! यदि एक आरामकुर्सी होती तो मैं उस पर बैठ जाता।

वह था कल्पवृक्ष। उसके नीचे खड़े होकर जो इच्छा की जाए, वह पूरी हो जाती है। उसी समय पता नहीं कहां से एक आराम कुर्सी आ गई। वह उस पर बैठ गया। बैठकर उसने सोचा – एक पलंग होता तो थोड़ी देर के लिए मैं लेट जाता। विचार करने की देर थी कि पलंग भी आ गया। वह लेट गया। लेटते ही सोचने लगा – घर होता तो पत्नी से कहता कि मेरी टांगे दबा दे, मेरा सिर मल दे। सोचते ही कई अप्सराएं वहां उपस्थित हो गईं। कोई पांव दबाने लगी, कोई गीत गाने लगी, कोई नाचने लगी। उस आदमी ने उन सबको देखा तो सोचा – इन सब स्त्रियों के साथ मेरी पत्नी मुझे देख ले तो झाड़ू लेकर मेरी पिटाई कर डाले। सोचना अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि हाथ में झाड़ू लेकर पत्नी आ गई। धड़ाधड़ उसे लगी मारने। अप्सराएं भाग गईं। वह पलंग से उठकर दौड़ा। आगे–आगे वह, पीछे–पीछे झाड़ू को लिए पत्नी।

नारद जी ने लौटते हुए दूर से उसे देखा; पुकारकर बोले – 'मूर्ख! सोचना ही था तो कोई अच्छी बात सोचते। यह क्या सोच बैठे तुम? यह तो कल्पवृक्ष है।'

सो भाई मेरे, प्राणायाम के कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर अच्छी बातें सोचना, बुरी बातें नहीं सोचना।

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (30)

न भावोऽनुपलब्धेः।।30।।

अर्थ – (न) नहीं (भावः) ब्रह्मभाव [जगत का] (अनुपलब्धेः) ऐसा उपलब्ध या प्राप्त न होने से अर्थात् ब्रह्मरूप नहीं है। क्योंकि जगत कभी ब्रह्मरूप में नहीं प्राप्त होता।

भावार्थ – विभिन्न प्रमाणों के द्वारा ब्रह्म के स्वरूप का निर्धारण किया गया है। इनमें से किसी भी प्रमाण से ब्रह्म से जगत् की उत्पत्ति सिद्ध नहीं होती अर्थात् इनके द्वारा ब्रह्म उपादान कारण सिद्ध नहीं होता। इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि ब्रह्म चेतन है क्योंकि जो ब्रह्म के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, वे इसे चेतन मानते हैं, जड़ नहीं। इसके विपरीत जगत् की जड़ता को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता। सब प्रमाण जगत् को जड़ कहते हैं। इसलिए जड़ जगत् का ब्रह्मरूप होना किसी भी प्रमाण से सिद्ध नहीं होता। ब्रह्म की अपनी सत्ता है और जगत् का ब्रह्मरूप होना किसी भी प्रमाण से सिद्ध नहीं होता। जगत् की अपनी। इन दो अलग–अलग तरह की सत्ताओं को किसी भी स्थिति में एक कहना या मानना अप्रामाणिक है।

वास्तव में, जगत को ब्रह्म रूप कहना ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को न समझना है। यदि ब्रह्म जगत के रूप में भासित हो रहा है तो इस दिखाई देने वाले रूप में अनासक्त होना क्यों हेय या त्याज्य माना गया है। यहां यह कह सकते हैं कि ब्रह्म का अवास्तविक रूप होने के कारण इसे हेय या त्याज्य माना गया है। ऐसे रूप से आसक्ति कैसी? इस आसक्ति को उचित नहीं कहा जा सकता। यहां एक बात की ओर ध्यान देना आवश्यक है कि आचार्यों ने ब्रह्म के जिस वास्तविक चेतन स्वरूप की ओर संकेत किया है, उसमें अवास्तविकता को कोई स्थान नहीं। फिर ब्रह्म को अवास्तविक समझना कहां तक ठीक है? इसके विपरीत जगत् को चेतन मानकर उसे हेय समझना युक्तिसंगत नहीं है। इसलिए किसी भी प्रमाण से यह सिद्ध नहीं होता कि जगत ब्रह्मरूप है।

– इसी तथ्य की पुष्टि में अगले सूत्र में एक अन्य हेतु प्रस्तुत किया जाएगा।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

आर्यजनता की भारी मांग पर सभा द्वारा पुनः प्रकाशन

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में

केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

निर्वाण वर्ष की स्मृति घड़ियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष की स्मृति हेतु तैयार घड़ियां चार आकारों में तैयार कराई गई हैं। सुन्दर, आकर्षक डिजाइन एवं गोल्डन कलर में महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ तैयार ये घड़ियां मात्र 100/– में बड़े आकार में तथा 75/– रुपये में छोटी उपलब्ध हैं। इसके अलावा आर्यसमाजों के सत्संग हॉल में लगाने के लिए सुपर बड़ी घड़ी 300/– तथा टेबल घड़ी 50/– रुपये मात्र में उपलब्ध हैं। पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, दूरभाष: 011–23365959, टेलिफैक्स :23343737, Email :aryasabha@yahoo.com; Web.:www.delhisabha.com

ऋग्वेद — ओ३म् — यजुर्वेद

(इन्द्राः स्वर्गम् यन्ति लोकम्)
(यज्ञ करने वाले सुखों को प्राप्त करते हैं)
प्रदेश की सभी आर्यसमाजों के सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के तत्वाधान में

प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन एवं विश्व शान्ति यज्ञ

आयोजन स्थान – महाजन हाल शालामार, जम्मू

दिनांक : 24 – 25 व 26 अप्रैल 2009

सभी धर्म प्रेमी सज्जन सपरिवार इस कार्यक्रम में आमन्त्रित हैं।
इस सम्मेलन में भाग लेकर अपनी वैदिक संस्कृति के गौरव को बढ़ायें।
इस सम्मेलन को सुशोभित कर रहे हैं

यज्ञ के ब्रह्मा : डा. ... शास्त्री, ...
मुख्य प्रवक्ता : स्वामी ... सरस्वती (...)
प्रो. ... (... अजमेर)
... आर्य (प्रधान दिल्ली प्रतिनिधि सभा)
... आर्य (मंत्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली)
... कुमार, ... शास्त्री, ...
भजनोपदेशक : ... (बिजनौर)

कार्यक्रम

24 अप्रैल शुक्रवार	25 अप्रैल शनिवार	26 अप्रैल रविवार
योग शिविर प्रातः 5 से 6.30 बजे तक	योग शिविर प्रातः 5 से 6.30 बजे तक	योग शिविर प्रातः 5 से 6.30 बजे तक
विश्व शान्ति यज्ञ प्रातः 7 से 9.30 बजे तक	विश्व शान्ति यज्ञ प्रातः 7 से 9.30 बजे तक	विश्व शान्ति यज्ञ प्रातः 7 से 9.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन प्रातः 10 बजे से 1.30 बजे तक	भजन एवं प्रवचन प्रातः 10 बजे से 1.30 बजे तक	भजन एवं प्रवचन प्रातः 10 बजे से 1.30 बजे तक
भजन प्रवचन सायं 4 बजे से 7 बजे तक	भजन प्रवचन सायं 4 बजे से 7 बजे तक	यज्ञ की पूर्णाहुति प्रातः 10 बजे ...

निवेदक

भारत भूषण गुप्ता — सत्यवीर गुप्ता — रविकान्त

स्वागतकर्ता : आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर (रजि.) व प्रदेश की सभी आर्यसमाजों के अधिकारी व गणमान्य सदस्य

कार्यालय आर्यसमाज बख्शी नगर, जम्मू - 180001

सामवेद — अथर्ववेद

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

कॉमिक्स पढ़िए और जीतिए

5,00,000 रु० तक के इनाम

पांच लाख रुपयों की पुरस्कारी योजना

आज ही मंगवाएं

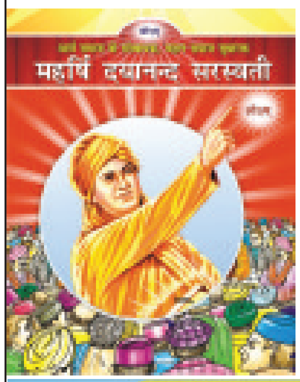

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने एवं परिवार के साथ जोड़ने के लिए तैयार कराई गई है कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई गई हैं। अन्य भाषाओं में भी इनका अनुवाद कराया जा रहा है। पढ़ने वाले समस्त बच्चों के लिए एक प्रश्न पत्र भी दिया गया है जिसके सही उत्तर देने वालों के लिए 5 लाख रुपये तक के विभिन्न पुरस्कार भी दिए जाएंगे। इनामों का विवरण तथा नियम कॉमिक्स में दिए गए हैं। मूल्य मात्र 12 रुपये प्रति कॉमिक्स। आज ही आर्डर करें। पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

पांच लाख रुपये की पुरस्कारी योजना

प्रथम पुरस्कार : (१) : दो लोगों के लिए मॉरिशस/मलेशिया/सिंगापुर (किसी एक स्थान की) आने-जाने की हवाई टिकटें तथा एक सप्ताह का टूर पैकेज अथवा १ लाख रुपये का चैक साथ में एम.डी.एच. का गिफ्ट हैम्पर।

द्वितीय पुरस्कार : (२) : भारत में किसी भी स्थान से किसी भी स्थान पर जाने-आने की दो लोगों की सीधी हवाई टिकटें तथा तीन दिनों का ३ स्टार कॅटेगिरी होटल में ठहरने का व्यय

तृतीय पुरस्कार : (३) : भारत में किसी भी स्थान से किसी भी स्थान पर जाने-आने की दो लोगों के लिए सीधी हवाई टिकटें

चतुर्थ पुरस्कार : (२०) प्रत्येक ५१००/- रु. (एक राज्य में एक) साथ में एम.डी.एच. का एक गिफ्ट हैम्पर।

पांचवा पुरस्कार : (५०) नकद धनराशि - प्रत्येक २१००/- रुपये

छठा पुरस्कार : (१००) नकद धनराशि - प्रत्येक १०००/- रुपये

सांतवा पुरस्कार : (५००) नकद धनराशि - प्रत्येक २५१/- रुपये नकद।

विशेष पुरस्कार : जिस विद्यालय से प्रथम पुरस्कार होगा, उस विद्यालय को विशेष पुरस्कार। जिस विद्यालय से सर्वाधिक बच्चे भाग लेंगे, उस विद्यालय के लिए विशेष पुरस्कार। जिस कक्षा से सबसे अधिक बच्चे भाग लेंगे, उस कक्षाध्यापक को पुरस्कार। पुरस्कार MDH लिमि. द्वारा प्रायोजित होंगे। विजेता अपने पुरस्कारों को दीपावली २००९ के पश्चात् तीन महीने तक प्राप्त कर सकेंगे।

प्रकाशक-वितरक: आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, 455, खारी बावली, दिल्ली-6 फोन: 23953112, 23958360

प्राप्ति स्थान: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड नई दिल्ली-1, email: aryasabha@yahoo.com website: delhisabha.com

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 में 5, 10 एवं 20 किलो के पैकेटों में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

डाक/ट्रांसपोर्ट से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

– संयोजक, विक्रय विभाग

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष के अवसर पर आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में

अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद् दिल्ली अन्तर्गत दिल्ली की आर्यसमाजों में संचालित होने वाले विद्यालयों की अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन अप्रैल, 2009 में किया जा रहा है। समस्त विद्यालयों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने विद्यालयों से प्रतियोगिताओं नें भाग लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें। प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रतियोगिता संयोजकों से दिए गए नम्बरों पर सम्पर्क करें। आयोजित होने वाली प्रतियोगितओं, स्थान, समय तथा प्रतियोगिताओं के संयोजकों के विवरण इस प्रकार हैं :-

क्र. सं. | प्रतियोगिता | स्थान | दिनांक एवं समय | प्रधान | संयोजक/प्रधानाचार्य

1. **भाषण प्रतियोगिता**
   - स्थान: दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर
   - दिनांक एवं समय: **25 अप्रैल, 09**, प्रात: 9.30 बजे
   - प्रधान: श्री बलदेव राज आर्य (9312220135)
   - संयोजक/प्रधानाचार्य: श्रीमती रेणुका कौल (9811357449)
   - **वर्ग -1 :** कक्षा 6 से कक्षा 8 तक — **भाषण विषय :** "मोबाइल फोन विद्यालय में लाने की अनुमति दी जाए या नहीं"
   - **वर्ग -2 :** कक्षा 9 से कक्षा 12 तक — **भाषण विषय :** "इन्टरनेट के लाभ और हानियां"
   - नोट : एक विद्यालय से केवल दो प्रतियोगी ही भाग ले सकते हैं। प्रति वक्ता समय 4 मिनट होगा।

2. **ग्रुप डिस्कशन**
   - स्थान: बिरला आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, कमला नगर
   - दिनांक एवं समय: **27 अप्रैल, 09**, प्रात: 9.30 बजे
   - प्रधान: श्री योगेश आर्य (9811795045)
   - संयोजक/प्रधानाचार्य: श्रीमती सुनीता खुराना (9868062481)
   - **वर्ग** – कक्षा 8 से कक्षा 12 तक — **विषय :** "वर्तमान पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में समाप्त होता बचपन"
   - नोट : प्रत्येक विद्यालय से 4 से 6 विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। समय सीमा 10 मिनट।

3. **समूह गान**
   - स्थान: रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, बाबा खड़कसिंह मार्ग, कनॉट प्लेस
   - दिनांक एवं समय: **24 अप्रैल, 09**, प्रात: 9.30 बजे
   - प्रधान: कर्नल आर. के. वर्मा (9818052955)
   - संयोजक/प्रधानाचार्य: श्रीमती उषा मदान (25748875)
   - **वर्ग** – कक्षा 6 से कक्षा 10 तक — **विषय :** महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित
   - नोट : प्रतियोगी संख्या : अधिकतम 20 (Boys & Girls) होंगे। वाद्ययन्त्र : तीन या चार (बिजली से चलने वाले वाद्य यन्त्र न लाएं।)

4. **एकांकी प्रतियोगिता**
   - स्थान: आर्य विद्या मन्दिर केशव पुरम, नई दिल्ली
   - दिनांक एवं समय: **28 अप्रैल, 09**, प्रात: 9.30 बजे
   - प्रधान: श्री मनवीरसिंह राणा (9350331718)
   - संयोजक/प्रधानाचार्य: श्रीमती सरोज यादव (9250938820)
   - **वर्ग** – कक्षा 5 से कक्षा 12 तक — **विषय :** महर्षि दयानन्द जी के जीवन के प्रेरक प्रसंगों पर आधारित
   - नोट : एकांकी समय प्रत्येक 10 मिनट। अधिकतम प्रतियोगी संख्या 10 होगी। पत्रानुसार वेशभूषा तथा वाद्ययन्त्रों का प्रयोग कर सकते हैं।

5. **नुक्कड़ नाटक**
   - स्थान: दयानन्द मॉडल सै. स्कूल, बी ब्लाक, विवेक विहार, दिल्ली
   - दिनांक एवं समय: **29 अप्रैल, 09**, प्रात: 9.30 बजे
   - प्रधान: श्री बी. एन. भाटिया, मैनेजर, 9818283777
   - संयोजक/प्रधानाचार्य: श्रीमती आशा अस्थाना (22151150)
   - **वर्ग** – कक्षा 5 से कक्षा 12 तक
   - **विषय 1:** सब पढ़ें – सब बढ़ें, **विषय 2 :** कन्या भ्रूण हत्या – सामाजिक कलंक
   - **विषय 3:** गुटका, पान मसाला, धूम्रपान के दुष्परिणाम, **विषय 4:** प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, **विषय 5:** बाल मजदूरी – सामाजिक अपराध
   - **नोट : 1.** वाद्यों का प्रयोग प्रतियोगी स्वयं करेंगे। 2. पात्रानुसार वेशभूषा का प्रयोग करें।

6. **वाद-विवाद प्रतियोगिता**
   - स्थान: आर्य मॉडल स्कूल, आदर्श नगर, दिल्ली
   - दिनांक एवं समय: **21 अप्रैल, 09**, प्रात: 9.30 बजे
   - प्रधान: श्री अर्जुन देव सोनी
   - संयोजक/प्रधानाचार्य: श्रीमती प्रोमिला सिंह (27673655, 27670755)
   - **वर्ग -1 :** कक्षा 6 से कक्षा 8 तक — **विषय :** टी.वी. के विज्ञापनों पर अंकुश आवश्यक है।
   - **वर्ग - 2 :** कक्षा 9 से कक्षा 12 तक — **विषय :** कक्षा 8 तक बिना परीक्षा के पास करना उचित नहीं है
   - नोट : प्रत्येक विद्यालय से दो विद्यार्थी एक पक्ष में तथा एक विपक्ष में भाग ले सकते हैं। समय सीमा: 30 मिनट प्रत्येक प्रतियोगी।

8. **मन्त्र लेखन प्रतियोगिता**
   - स्थान: महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, न्यू मोती नगर, नई दिल्ली
   - दिनांक एवं समय: **23 अप्रैल, 09**, प्रात: 9.30 बजे
   - प्रधान: श्री सुरेश टंडन (9811982493)
   - संयोजक/प्रधानाचार्य: श्रीमती श्रुति टंडन (65930559)
   - **वर्ग** – कक्षा 6 से कक्षा 10 तक **विषय :** ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के 8 मन्त्र तथा गायत्री मन्त्र — श्रीमती इन्द्रा छाबड़ा, प्रधानाचार्य (9868992733)
   - नोट : 1. विद्यालय द्वारा उत्तर पुस्तिका दी जाएगी। 2. अपना पैन प्रतियोगी स्वयं लाएंगे। 3. प्रत्येक विद्यालय से 10 प्रतियोगी भाग ले सकते हैं। समय 30 मिनट

9. **खेलकूल प्रतियोगिताएं**
   - स्थान: सहदेव मल्होत्रा आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग (प.) नई दिल्ली
   - दिनांक एवं समय: **30 अप्रैल, 2009**, **1 मई, 2009** प्रात: 9.30 बजे
   - प्रधान: राजीव आर्य (921220904044)
   - संयोजक/प्रधानाचार्य: श्रीमती उमा भारद्वाज (921227201
   - **गेम्स :** बैडमिन्टन, टेबल टेनिस, खो-खो, वॉलीबॉल
   - **ऐथलेटिक्स :** 100 Mtr Race (Heat/Final), Obstacle Race (Heat/Final) , Long Jump, Shotput, Ball Throw, 4x100 Relay (Heat/Final)

प्रतियोगिता समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह : शनिवार 2 मई, 2009
सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली में

-: निवेदक :-

ब्र. राजसिंह आर्य	विनय आर्य	अनिल तनेजा	सुरेन्द्र रैली	राजीव आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	प्रस्तोता	अध्यक्ष	प्रबन्धक
(9350077858)	(9350204466)	(9873558465)	(9810855696)	(9212209044)	(9212160210)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य विद्या परिषद् दिल्ली — एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग

प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सामान्य नियम पृष्ठ 6 पर प्रकाशित किए गए हैं।

प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सामान्य नियम :-

1. सभी प्रतियोगिताओं में प्रतियोगी सफेद गणवेश में हों। विद्यालय का परिचय देने वाला कोई चिह्न धारण न करें।
2. सभी प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।
3. सभी प्रतियोगिताओं में निर्णायकों का निर्णय अन्तिम होगा।
4. जिस विद्यालय के विद्यार्थी सबसे अधिक प्रतियोगिताओं में भाग लेंगें उस विद्यालय को विशेष शील्ड से सम्मानित किया जाएगा।
5. जिस विद्यालय के विद्यार्थी सबसे अधिक पुरस्कार जीतेंगे उस विद्यालय को विशेष शील्ड से सम्मानित किया जाएगा।
6. विद्यार्थियों को समय पर पहुंचाना आवश्यक है, ताकि प्रतियोगिता समय पर आरम्भ हो तथा समय पर समाप्त हो।
7. केवल आर्यसमाज से सम्बधित विद्यालय ही भाग ले सकेंगे।
8. निर्णायक मंडल जिस विद्यालय में प्रतियोगिता होगी वह ही निश्चित करेगा। निर्णायक मंडल में तीन सदस्य होंगे। एक सदस्य स्कूल से व दो सदस्य बाहर से होंगे।
9. सभी भाग लेने वाले विद्यार्थियों को समापन समारोह में 2 मई, 2009 को एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग में पुरस्कृत किया जाएगा।

पृष्ठ 2 का शेष

लाला हरदेव सहाय, दादा गनेशीलाल, कन्हैयालाल मिण्डा, बहन सत्यबाला तायल, मातादीन खेतान, छबीलदास आर्य। इसी प्रकार रोहतक जिले में आई अप्रत्याशित बाढ़ में सन् 1960 में हरियाणा नागरिक संघ कलकत्ता से श्री लालमन आर्य के नेतृत्व में अन्न, वस्त्र, धन आदि से बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में जाकर अथक प्रयास किए। तत्कालीन राज्य के शिक्षामन्त्री प्रो. शेर सिंह व श्री बनारसीदास गुप्ता मुख्य सहयोगी रहे।

व्यापार के कारण बाहर रहते हुए भी गांव से विशेष स्नेह बना रहा। गांव में हाईस्कूल, आयुर्वेद औषधालय, कन्या पाठशाला, सरोवर, कुंए, तालाब, धर्मशाला के निर्माण कराते रहे। गांव की सड़क पक्की कराने व पीने के पानी की व्यवस्था व बेसहारों को बिना मूल्य प्लॉट दिलाकर विशेष सम्मान प्राप्त किया। श्री लालमन जी काव्यानुरागी रहे। इन्होंने सैकड़ों प्रभु भक्ति, देशभक्ति, आत्मोत्थान व सुधारवादी गीत लिखे। कंठ सुरीला था व गाने का शौक था। जहां भी रहे, चाहे गांव में या उत्तरी बंगाल के चाय बगानो में, चाहे कलकत्ता में भजन गीत के माध्यम से जनता को अपने विचार प्रभावशाली ढंग से पहुंचाते थे। आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय उनका नित्यकर्म था और वैदिक विचारों का प्रचार–प्रसार उनका मुख्य लक्ष्य रहा।

प्रसन्नचित्त निराभिमान लालमन जी का मन एक लाल की तरह कान्तिमान एवं स्फटिक की तरह पारदर्शी था। 20 जून 1983 को उनकी इहलीला बंगलौर में समाप्त हुई। उनकी स्मृति में नगर पालिका हिसार ने मॉडल टाउन में एक पार्क का निर्माण कराया। दयानन्द कॉलेज हिसार में उनके परिवार के सहयोग से डीएवी कमेटी ने लालमन आर्य महिला छात्रावास का निर्माण कराया। सन् 1972 में वानप्रस्थ की दीक्षा के पश्चात् उनका समस्त समय हिसार व आस–पास के क्षेत्रों में वेद प्रचार, समाजसेवा, ग्राम सुधार के प्रयास व ईश्वर भक्ति में व्यतीत हुआ। उन्होंने भारतीय संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप ही सेवा व्रत को ध्येय बनाया। अनेक धार्मिक सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित रहे। पदों की लालसा से सदा दूर रहे।

आर्यसमाज शादीखामपुर एवं महर्षि दयानन्द आर्य प0 स्कूल शादीखामपुर का

वार्षिकोत्सव समारोह

22 से 26 अप्रैल 2009 तक
प्रभातफेरी : 22–23 अप्रैल, 2009
विद्यालय वार्षिकोत्सव : 24 अप्रैल, 09
आर्यसमाज वार्षिकोत्सव : 25 अप्रैल
यज्ञ : प्रातः 7 से 9 बजे
ब्रह्मा : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
भजन : पं. राजवीर शास्त्री
प्रवचन : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
भजन प्रवचन : सायं 6 से 8 बजे
पूर्णाहुति 26 अप्रैल, 2009
मुख्य वक्ता : डॉ. सुनीति आर्या एवं आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें

– भीमसेन कामराह, प्रधान
कृपाल सिंह, मन्त्री

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक के

वार्षिकोत्सव का समापन

रविवार, 19 अप्रैल, 2009
प्रातः 9:30 से 1 बजे तक
भजनोपदेश एवं वेद सम्मेलन
अध्यक्षता : आचार्य धर्मपाल जी
मुख्य अतिथि : महाशय धर्मपाल जी

– डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया
जगदीश गुलाठी, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज रामपुर कोटा (राज0)

प्रधान : श्री बनवारी लाल सिंहल
मन्त्री : योगाचार्य रमेश गोस्वामी
कोषाध्यक्ष : श्री राजीव कुलश्रेष्ठ

आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली का

31वाँ वार्षिकोत्सव

14 से 19 अप्रैल 2009
सामवेद शतक यज्ञ पूर्णाहुति
19 अप्रैल, प्रातः 7 से 9 बजे तक
ध्वजारोहण : प्रातः 9 से 9:15 बजे
भक्ति संगीत : पं॰ कंचन कुमार जी
वेद सम्मेलन : प्रातः 10.30 बजे से
अध्यक्षता : श्री इन्द्रसेन जी मल्होत्रा
वक्ता : आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं आचार्य अखिलेश्वर भारद्वाज
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– ओम प्रकाश आर्य, प्रधान
चन्द्रभान, मन्त्री

आर्यसमाज काकड़वाड़ी मुम्बई में

पं. ताराचन्द 'वैदिक' का अभिनन्दन

वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से सम्मानित होकर लौटे पं॰ ताराचन्द वैदिक का आर्यजनों ने नारनौल पहुंचने पर भव्य स्वागत किया। 15 मार्च को आर्यसमाज काकड़वाड़ी, मुम्बई में पं॰ वैदिक जी का अभिनन्दन किया गया, जिसमें अभिनन्दन पत्र, 11000/– रूपये नगद, श्रीफल, माला व शॉल भेंट दिया गया। इस अवसर पर भारत भर के शताधिक भजनोपदेश, उपदेशिका व मूर्धन्य विद्वान उपस्थित थें। समारोह में डॉ॰ सोमदेव शास्त्री सम्पादित 3 कृतियों का भी विमोचन किया गया। डॉ॰ भवानी लाल भारतीय द्वारा लिखित ''आर्य भजनोपदेशक – व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' में पं॰ ताराचन्द 'वैदिक' का परिचय भी है। ''सांख्य योग संदेश'' एवं ''वैदिक सत्संग सुधा'' भी आदर्श ग्रन्थ है। दो दिवसीय कार्यक्रम में अनेक विद्वानों ने अपनी – अपनी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर वेद प्रचार मण्डल, नारनौल, जिला महेन्द्रगढ़ से छोटे लाल प्रधान, विद्या सागर राता कलाँ, मन्त्री सतीश आर्य, रामपत आर्य, मा॰ सूरजभान आदि अनेक गणमान्य आर्यजन उपस्थित थें।

– आचार्य नरेन्द्र गनहर
प्रैस प्रभारी, जिला वेद प्रचार मंडल, महेन्द्रगढ़, हरियाणा

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–1 का

43वाँ वार्षिकोत्सव

13 से 19 अप्रैल 2009
समापन एवं ऋग्वेदीय पूर्णाहुति
19 अप्रैल, 09 प्रातः 8 से 1.30 बजे
यज्ञ पूर्णाहुति : प्रातः 8 बजे से
उद्घाटन : हृदय परीक्षण प्रयोगशाला
संगीत भजन : श्री नरेन्द्र जी 'वशिष्ठ'
विशेष प्रवचन
विश्व शान्ति में आर्य समाज की भूमिका
प्रवचन : श्री महेद्रपाल आर्य
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– रामकृष्ण तनेजा, प्रधान
दीनानाथ ग्रोवर, मन्त्री

आर्यसमाज राजेन्द्रनगर नई दिल्ली के

57वें वार्षिकोत्सव का समापन

रविवार, 19 अप्रैल, 2009
यज्ञ पूर्णाहुति : प्रातः 7:30 से 9 बजे
यज्ञ ब्रह्मा : डॉ॰ भारद्वाज पाण्डेय जी
भजन : श्री सत्यपाल पथिक
आर्य महासम्मेलन
प्रातः 10:15 से 12:30 बजे तक
महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत
अध्यक्षता : आचार्य डॉ. राजू वैज्ञानिक
मुख्य अतिथि : महाशय धर्मपाल जी
श्री रमाकान्त गोस्वामी जी
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– अशोक सहगल, प्रधान
नरेन्द्र मोहन वलेचा, मन्त्री

वार्षिक परीक्षाओं में सफल समस्त विद्यार्थियों एवं अच्छे परिणामों के लिए विद्यालयों को हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी कक्षा से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 20%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों को नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली का

34वां वार्षिकोत्सव

20 से 25 अप्रैल, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.30–8 बजे
ब्रह्मा : आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार
भजन : पं. सत्यपाल पथिक
प्रवचन : पं. रामकिशोर शास्त्री
भजनप्रवचनः सांय 7.30–9.30 बजे

पूर्णाहुति एवं समापन
26 अप्रैल, 2009 रविवार

मुख्य अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ लें।

– श्रीमती उषा किरण, प्रधान
कृष्णलाल किनरा, मन्त्री

योग, प्राकृतिक, मनोवैज्ञानिक व आध्यात्मिक चिकित्सा शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज मेहता पार्क, एटा (उ. प्र.) में योग प्राकृतिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्म चिकित्सा शिविर 22 मार्च से 29 मार्च तक आयोजित किया गया। योग शिविर के प्रभारी पातंजलि योग समिति एटा के मंडल प्रभारी श्री आई. डी. शर्मा थे। जबकि प्राकृति, मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्म शिविर का संचालन डॉ. आनन्द स्वामी ने किया। इस अवसर पर ओ३म् का सप्त स्वरों में गुंजन, योग निद्रा, ध्यान आदि से मनोवैज्ञानिक और आध्यात्म चिकित्सा की गई। आर्यसमाज एटा के अधिकारियों ने इसमें पूर्ण सहयोग दिया।

– डॉ. आनन्द स्वामी

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में केवल युवतियों के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास शिविर

27 से 31 मई, 2009

शिविर में भाग लेने के लिए इच्छुक की आयु 16 से 25 वर्ष तथा न्यूनत्म शिक्षा महाविद्यालय (कॉलेज) प्रथम वर्ष होना आवश्यक है।

विशिरार्थी 26 मई को सायं 4 बजे के बाद ही पहुंचें। शिविर का समापन 31 मई को सायंकाल होगा। पंजीकरण शुल्क 250/– रुपये होगा। शिविरार्थियों की अधिकतम संख्या 400 तक होगी। आवेदन की अन्तिम तिथि 15 मई, 2009 है। 30 अप्रैल से आवेदन करने वालों को विशेष वरीयता दी जाएगी। आवास व्यवस्था सामूहिक होगी। प्रत्येक शिविरार्थी को पृथक बिस्तर दिया जाएगा।

शिविरार्थियों की लिखित परीक्षा होगी। उत्तीण होने वाले शिविरार्थियों को प्रमाणपत्र तथा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय को क्रमशः 5 हजार, 2 हजार, 1हजार पारितोषिक प्रदान किए जाएंगे। अधिक जानकारी के ***डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट दर्शनयोग डॉट ऑर्ग*** देखें।

– आचार्य ज्ञानेश्वर

125वें निर्वाण वर्ष पर
आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली का

29वां वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद शतकम्

17 से 19 अप्रैल, 2009

यज्ञ : प्रातः 7–9.30 बजे
ब्रह्मा : आचार्या शोभा शास्त्री
भजन : श्री सहदेव बेधड़क
प्रवचन : आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी
आशीर्वाद : स्वामी यज्ञमुनि वानप्रस्थी
भजनप्रवचनः सांय 7–10 बजे

पूर्णाहुति एवं समापन : 19 अप्रैल, 09

विशेष सत्र : प्रातः 10 से 1बजे तक
विषयः महर्षि दयानन्द की विश्व को देन
अध्यक्ष : श्री रामजीलाल आर्य
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें

– श्रीमती विद्यावती आर्या, प्रधान

125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में

आध्यात्मिक सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में आध्यात्मिक, चारित्रिक एवं नैतिक मूल्यों को समाज के प्रत्येक जन–जन में प्रतिष्ठित करने के लिए, संकल्पित विकासपुरी वेदव्यास डीएवी पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय 13वें वैदिक धर्म चर्चा एवं आध्यात्मिक सम्मेलन का विशेष रूप से आयोजन किया गया। इसमें अनेक शिक्षाविदों, समाज सेवियों साहित्य संगीत कला और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करने वाले विशेष प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्यनेता श्री रामनाथ सहगल ने कहा कि आगर समाज को सच्चे समर्पित धार्मिक, चरित्रवान लोगों का देश बनाना है तो ऐसे लोगों का निर्माण आर्य समाज तथा विद्यालयों द्वारा ही सम्भव है। उन्होंने कहा कि विदुषी प्रधानाचार्य श्रीमती चित्रा नाकरा एवं विद्यालय के तेजस्वी चरित्रवान धर्माचार्य श्री भगवान देव वेदालंकार एवं श्री हरेन्द्र शास्त्री जी अपने विशेष उच्च आदर्शों से इस संस्था को उंचाईयों के शिखर पर ले जाने के लिए प्रयासरत हैं।

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक में

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी में सोमवार 2 मार्च,09 को प्रातः 11 बजे से ऋषि बोधोत्सव का आयोजन श्रीमती शशिप्रभा गोयल की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती प्रोमिला घई (निगम पार्षद), श्रीमती मीना ठाकुर (पूर्व निगम पार्षद) थीं। भूतपूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या ने ऋषि के तीन महान कृतित्वों बहते प्रवाह को नई दिशा की ओर मोड़ने, पत्थर को फूल समझने एवं स्वयं विष पीकर दूसरों को अमृत बांटने की चर्चा की।

– श्रीमती विमला मलिक, प्रधाना

आर्यसमाज आर्यनगर पहाड़गंज में

सांख्य–योग–अध्यात्म शिविर

19 अप्रैल से 30 अप्रैल, 09

शिविर में सरल एवं स्पष्ट शब्दों में सांख्य एवं योगदर्शन के सिद्धान्तों का विवेचन एवं सूत्रों का अध्यापन आचार्य श्री आनन्दप्रकाश जी दर्शनाचार्य करेंगे। अध्यापन समय प्रातः 8 से10 तथा दोपहर 3 से 5 बजे होगा। जिज्ञासु आर्यबन्धु अपना स्थान आरक्षित करा लेवें। *– डॉ. बलिरामजी राणा, प्रधान*
दूरभाष : 2589017

आर्यसमाज सन्देश विहार में

रामनवमी पर यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज सन्देश विहार के तत्वावधान में रामनवमी के पावन पर्व पर राष्ट्र कल्याणार्थ 11 कुण्डीय विराट यज्ञ आचार्य महेन्द्र भाई के ब्रह्मत्व में लोक विहार के सैन्ट्रल पार्क में 30 अप्रैल, 09 को प्रातः 7 से 9 बजे तक आयोजित हुआ। इस अवसर पर श्री राजेश अमर प्रेमी के भजन तथा स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक के प्रवचन हुए।

– दुर्गेश आर्य, मन्त्री

शोक समाचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री जगदीश लाल का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालध्यक्ष श्री जगदीश लाल का निधन शनिवार 11 अप्रैल, 2009 को कुछ दिनों की बीमारी के बाद 55 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन सायं 5 बजे अवन्तिका, बुध विहार स्थित श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज हनुमान रोड के धर्माचार्य डॉ. कर्णदेव शास्त्री, पं. राजवीर शास्त्री तथा श्री बालकृष्ण आर्य ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर श्री जगदीश लाल जी के परिजनों के साथ–साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री राजेन्द्र दुर्गा, पत्रकार श्री चन्द्रमोहन आर्य के अतिरिक्त दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के समस्त कर्मचरियों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री जगदीश लाल जी अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, दो सुपुत्रों तथा दो सुपुत्रियों को छोड़ गए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विभाजन के बाद जब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन हुआ तभी से श्री जगदीश लाल जी दिल्ली सभा को अपनी सेवाएं दे रहे थे। वे आर्यसमाज का अपनी माता मानकर कार्य करते थे। मृत्युपर्यन्त समर्पित भाव से कार्यालय अध्यक्ष के पद पर आसीन श्री जगदीश लाल जी अत्यन्त ही निष्ठावान, कर्मठ, परिश्रमी थे। वे अपनी योग्यता और निपुणता के कारण सभी आर्यसमाजी क्षेत्रों में लोकप्रिय हो गए।

उनकी पुण्य स्मृति में मंगलवार 14 अप्रैल, 09 को शोक सभा एवं शान्ति यज्ञ अवन्तिका सी ब्लाक स्थित दुर्गा मन्दिर में सायं 3 से 4 बजे सम्पन्न हुआ जिसमें उनके पारिवारिक जनों के साथ–साथ दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों के सदस्यों, सभा अधिकारियों ने पहुंचकर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल को पितृशोक

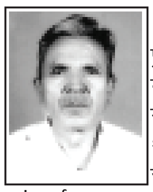

आर्यसमाज गांधीधाम (कच्छ–गुजरात) के प्रधान श्री पुरुषोत्तम भाई पटेल के पूज्य पिता एवं आर्यसमाज गांधीधाम के ही पूर्व प्रधान श्री वालजी भाई पटेल का निधन दिनांक 24 मार्च 2009 को अल्प बीमारी के बाद हो गया। वे 85 वर्ष के थे। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से किया गया। स्व० वालजीभाई पटेल कर्मठ, परोपकारी, समाजसेवक, धार्मिक एवं कर्तव्य परायण थें। उन्होने कई वर्ष तक आर्यसमाज गांधीधाम के प्रधान पद को पूर्ण निष्ठा से सम्भाला। वे गांधीधाम में वैदिक धर्म के मुख्य सूत्रधार थे। आर्यसमाज गांधीधाम की प्रगति में उनका विशेष सहयोग रहा है।

कैप्टन सुरजन सिंह यादव को पत्नीशोक

आर्यसमाज सरस्वती विहार के संस्थापक कैप्टन सुरजन सिंह यादव (ज्येष्ठ भ्राता श्री भगवान सिंह यादव, संरक्षक आर्यसमाज शादी खामपुर) की धर्मपत्नी श्रीमती विमला यादव का 10 अप्रैल, 09 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार गढ़गंगा में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शोक सभा 12 अप्रैल, 09 को हुई जिसमें काफी संख्या में गणमान्य महानुभावों ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीमती विमला यादव वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत आर्य महिला थीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सदगति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

13 अप्रैल, 2009 से 19 अप्रैल, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १६/१७-०४-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

आर्यसमाज पश्चिम विहार नई दिल्ली के

31वें वार्षिकोत्सव पर

सामवेदीय महायज्ञ तथा वेद प्रचार

20 से 26 अप्रैल 2009 तक

सामवेदीय यज्ञ : प्रति प्रातः 7 से 9 बजे
यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य राजू वैज्ञानिक जी
भजन : पं. नरेश दत्त जी
भजन–प्रवचनः सायं 7.30–9.30 बजे
आर्य महिला सम्मेलन : 22 अप्रैल, 09
समापन समारोह : 26 अप्रैल, 09
यज्ञ पूर्णाहुति : प्रातः 7 से 9 बजे तक
सार्वजनिक सभा : प्रातः 9:30 से
अध्यक्षता : श्री राजकुमार जी अग्रवाल
मुख्य वक्ता : आचार्य राजू वैज्ञानिक
स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं आचार्य इन्द्रदेव

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें

– जगदीश चन्द्र नांगिया, प्रधान
राजेन्द्र लाम्बा, मन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निवार्ण वर्ष पर

महर्षि जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव का आयोजन

नव–निर्मित ''आर्यसमाज मारतहाल्ली'' बंगलोर में दिनांक 22 फरवरी, 2009 दिन रविवार को महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें र्निवाण वर्ष के अवसर पर महर्षि जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव बड़े हर्ष और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ''आर्यसमाज मारतहाल्ली'' बंगलोर द्वारा प्रारम्भ त्रैमासिक पत्रिका ''आर्य ज्योति'' के प्रथम संस्करण का विमोचन श्री जी॰ वी॰ रामानैय्या एवं श्री क्रान्ति सुमन (सुपुत्र श्री आनन्द सुमन, देहरादून) के करकमलों के द्वारा हुआ तथा ''वैदिक यज्ञ विधि'' (रोमन इंगलिश) का विमोचन श्रीमती एवं श्री इन्द्र मोहन तलवार के करकमलों द्वारा हुआ। संचालन वेद प्रचारक श्री एस॰ पी॰ कुमार (वानप्रस्थी) के द्वारा किया गया। प्रधान श्री एच॰ सी॰ शर्मा जी ने कार्यक्रम की सफलता हेतु सभि सपस्थित आर्यजनों को धन्यवाद दिया।

– अरुण कुमार त्रिवेदी
मंत्री, आर्यसमाज मरातहाल्ली, बंगलौर

प्रतिष्ठा में,
श्री..

डॉ. भवानीलाल भारतीय जी को

शहीद राजपाल साहित्य सम्मान

वर्ष 2009 का शहीद राजपाल साहित्य सम्मन दिनांक 5 अप्रैल, 09 को दिल्ली के कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल के सभागार में आर्यसमाज के प्रख्यात लेखक डॉ. भवानीलाल भारतीय को कर्नाटक के भूतपूर्व राज्यपाल श्री टी. एन. चतुर्वेदी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए समारोह में दिया गया। अस्वस्थता के कारण डॉ. भारतीय की अनुपस्थिति में सम्मान उनके पुत्र डॉ. गौर मोहन माथुर ने ग्रहण किया। पुरस्कार में शॉल, स्मृति चिह्न, सम्मान पट्टिका तथा नकद राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर राजपाल एंड संस के संचालक श्री विश्वनाथ जी तथा डीएवी के प्रधान श्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा भी उपस्थित थे।

– सचिव, दयानन्द अध्ययन संस्थान, जोधपुर

सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सम्पूर्ण समुल्लासों की ऑडियो डीवीडी। सुमधुर एवं स्पष्ट आवाज में 35 घंटे की चलने वाली डीवीडी जो आपको तथा सुनने वाले समस्त लोगों को सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को समझाने में सहायक होगी। मात्र 15 रुपये में। डाक से मंगाने हेतु डाकव्यय पृथक से देय होगा।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर